'THE WOODS' अपनेपन से देखभाल की तलाश में यह प्यारा उद्यान-

मैं जून 2023 में पहली बार कॉमनवेल्थ गेम विलेज सोसाइटी में अपनी पुत्रवधू के पास रहने आया था। इस सोसायटी के समीप डीडीए द्वारा जो पार्क-जंगल तैयार किया गया है और जिसमें सोसायटी के लोगों का भी बड़ा महत्वपूर्ण योगदान है वह बहुत आकर्षक, मनभावन और मन को सुकून देने वाला था। मैं इससे बहुत प्रभावित हुआ और फिर जब भी हरिद्वार से यहां आता तो यह पार्क सुबह शाम शांति और खुली हवा के लिए मेरी नित्यप्रति की दिनचर्या का हिस्सा बन गया। हम उत्तराखंड के लोग जंगलों के अभ्यस्त हैं और हरियाली हमारे जीवन का प्राण है। दिल्ली में ऐसा देखकर मन मुदित हुआ। तब मैंने एक लेख लिखा था दिल्ली में यूं ही नहीं उग जाता है, जंगल यूं ही नहीं छा जाती है हरियाली।

इस पार्क में भ्रमण के दौरान मैंने प्रत्यक्ष देखा की सोसायटी के लोग बड़े मनोयोग से यहां के सभी विटपों की अच्छी देखभाल रखते हैं। और श्री वी पी राव पूर्व आईएएस तो हर पेड़-पौधे की देखभाल अपने परिवार के सदस्यों की भांति करते हैं। उनकी यह कार्यशैली देखकर मैं उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका और फिर बातचीत का सिलसिला चला तो वे इसमें भी निपुण थे। उन्होंने लगभग प्रत्येक पेड़ से मेरा परिचय कराया। खास बात यह है कि उन्हें किसी कुशल और दक्ष माली की तरह इन सभी पेड़ पौधों के नाम और उनके गुण धर्म रटे हुए हैं। वह हर पेड़ और उसकी एक-एक शाख का ऐसे ही ध्यान रखते हैं जैसे कोई अपने बच्चों का रखता है। नीम पीपल बरगद जैसे पेड़ों की आराधना करने में तो उन्हें अप्रतिम सुखानुभति होती है साथ ही प्रत्येक पेड़ को बड़े वात्सल्य और उनके प्रति आदरभाव से आलिंगन भी करते हैं। मुझे जब कभी किसी पेड़ के बारे में जिज्ञासा हो तो मैं उनसे पूछ लेता था। और वह तुरंत मेरी जिज्ञासा शांत कर देते। उन्होंने अपने प्रयासों से पक्षियों की प्यास बुझाने के लिए मिट्टी के बर्तन टांगें और स्वयं सपत्नीक इनमें जल भरते रहे तथा सूखे हुए पौधों को जल खाद आदि जरूरत की चीज से उसकी देखभाल करते रहे। मेरी भी जिज्ञासा बढ़ जाती थी।

एक तरफ यह डीडीए के स्वामित्व में है और दूसरी ओर The Woods नाम से गठित सोसायटी के सदस्य लोग बड़े आत्मीय भाव से जंगल की देखभाल करते हैं समय-समय पर पौधों का रोपण और उनकी उचित देखभाल करते रहते हैं। किंतु फिर भी कहीं ना कहीं कोई ना कोई कमी नजर आती ही है। कोई पेड़ सूख रहा है, कहीं घास सूख रही है या बेतरतीब उग रही है और इस बार तो यह देखकर बड़ी निराशा हुई। पेड़ों की काफी शाखाएं सूखने लग गई हैं कुछ पेड़ कांटे जैसे हो गए हैं । घास शुष्क हो रही है और इस बार की आंधी में तो बहुत से पेड़ धराशाई भी हो गए हैं। यह कहीं ना कहीं संपूर्ण देखभाल में कमी है। यह पार्क पूरी दिल्ली में एक आदर्श पार्क के रूप में विकसित हो सकता है। इसमें अपार संभावनाएं हैं। लेकिन मुख्य आवश्यकता इसे अपनेपन से संवारने की है। कॉमनवेल्थ गेम विलेज सोसायटी द्वारा जो पंजीकृत The Woods ग्रुप बनाया गया है वह इस क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य भी कर रहा है। यदि इस पार्क का स्वामित्व कुछ शर्तों के साथ इस ग्रुप को हस्तांतरित किया जाए तो इस पार्क में चार चांद लगा सकते हैं और यह एक घना हरा भरा जंगल की शक्ल में विकसित हो सकता है जो अनेक पक्षियों जानवरों का आश्रयदाता और पर्यावरण आपूर्ति का घर बन सकता है।

डॉ ० हरिनारायण जोशी अंजान